'हिन्दुआ सूर्य महाराणा प्रताप पुण्यतिथि'

19 जनवरी 2026, गोरखपुर।

भारत–भारती पखवाड़ा के अंतर्गत महाराणा प्रताप पुण्यतिथि पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में मुख्य अतिथि डॉ. शैलेष सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट करते डॉ. विजय कुमार चौधरी

भारत–भारती पखवाड़ा के अंतर्गत महाराणा प्रताप पुण्यतिथि पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में उद्‌बोधन देते मुख्य अतिथि डॉ. शैलेष सिंह

भारत–भारती पखवाड़ा के अंतर्गत महाराणा प्रताप पुण्यतिथि पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में मंचस्थ अतिथिगण

"सत्ता नहीं, सिद्‌धांतों के लिए जिए महाराणा प्रताप" : डॉ. शैलेष सिंह

"महाराणा प्रताप के आदर्श आज भी प्रासंगिक" : डॉ. विजय कुमार चौधरी

"महाराणा प्रताप पुण्यतिथि पर ओजस्वी व्याख्यान, स्वाभिमान और राष्ट्रधर्म का हुआ उद्‌घोष"

19 जनवरी 2026, गोरखपुर। महाराणा प्रताप केवल मेवाड़ के शासक नहीं थे, बल्कि वे भारतीय अस्मिता और आत्मसम्मान के जीवंत प्रतीक थे। उन्होंने वैभव और सत्ता के प्रस्ताव ठुकराकर यह सिद्‌ध कर दिया कि स्वतंत्रता और स्वाभिमान किसी भी समझौते से ऊपर हैं। हल्दीघाटी का युद्‌ध पराजय नहीं, बल्कि राष्ट्रधर्म के लिए किया गया ऐतिहासिक संघर्ष था, जिसने आने वाली पीढ़ियों को आत्मगौरव का पाठ पढ़ाया। उक्त बातें महाराणा प्रताप महाविद्‌यालय, जंगल धूसड़ में चल रहे भारत- भारती पखवाड़ा (12 से 26 जनवरी) के अंतर्गत 'हिन्दुआ सूर्य महाराणा प्रताप पुण्यतिथि' पर आयोजित पुण्यतिथि समारोह में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्‌यालय, गोरखपुर के विधि विभाग के सहायक आचार्य डॉ. शैलेष सिंह ने बतौर मुख्य वक्ता कहीं। विद्‌यार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. सिंह आगे कहा कि महाराणा प्रताप केवल एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि वे

स्वाभिमान, स्वतंत्रता, त्याग और राष्ट्रभक्ति की जीवंत प्रतिमूर्ति हैं।उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि स्वतंत्रता का मूल्य सिंहासन से भी अधिक होता है। जब समकालीन शासक अकबर की अधीनता स्वीकार कर वैभवपूर्ण जीवन जी रहे थे, तब महाराणा प्रताप ने जंगलों में रहकर, घास की रोटियाँ खाकर भी स्वतंत्रता के मार्ग से विचलित होना स्वीकार नहीं किया। उनका यह त्याग भारतीय इतिहास में अद्‌वितीय है। उन्होंने यह भी कहा कि महाराणा प्रताप का जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि राष्ट्रहित सर्वोपरि है, आत्मसम्मान के बिना जीवन व्यर्थ है और संघर्ष से ही सशक्त समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। उन्होंने आगे कहा आज के युवाओं के लिए महाराणा प्रताप का जीवन एक प्रेरणास्रोत है। जब हम नैतिक मूल्यों में गिरावट, स्वार्थ और पलायन की प्रवृत्ति देखते हैं, तब महाराणा प्रताप का जीवन हमें कर्तव्य, साहस और धैर्य का मार्ग दिखाता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्‌यालय के भूगोल विभाग के अध्यक्ष डॉ. विजय कुमार चौधरी ने कहा कि यह आयोजन केवल श्रद्‌धांजलि कार्यक्रम ही नहीं, बल्कि एक ऐसा विचार-यज्ञ सिद्‌ध हुआ जिसने यह संदेश दिया कि जब तक राष्ट्र में महाराणा प्रताप जैसे महापुरुषों की स्मृति जीवित है, तब तक भारत का स्वाभिमान भी अक्षुण्ण रहेगा। इससे पूर्व मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम अध्यक्ष ने साथ हिन्दुआ सूर्य महाराणा प्रताप के चित्र पर पुष्पांजलि कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम का संचालन महाविद्‌यालय के विद्‌यार्थी श्री आयुष कुशवाहा ने किया। इस दौरान महाविद्‌यालय के सभी शिक्षक और विद्‌यार्थी उपस्थित रहे।

सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी